जर्नी टू बीटिट्यूड'' पुस्तक का लोकार्पण

'अनेकान्त है समन्वय का कारक'

– आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, 30 मई।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ, युवाचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में ''जर्नी टू बीटिट्यूड'' पुस्तक का लोकार्पण जीवन विज्ञान अनुसंधान न्यास गुड़गांव के द्वारा आयोजित समारोह में हुआ। पुस्तक की प्रथम प्रति न्यास के अध्यक्ष नरेश जैन ने आचार्य महाप्रज्ञ को भेंट की।

इस लोकार्पण समारोह के अवसर पर विश्व कल्याण परिषद के अध्यक्ष शंकराचार्य स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती विशेष रूप से उपस्थित हुए।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने पुस्तक लोकार्पण समारोह के अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि मुझे प्रसन्नता है कि एक सुन्दर ग्रंथ हमारे हाथों में है। इस पुस्तक का मूल्य इसलिए है कि इसमें अनेकांत की दिशा में प्रस्थान है, मैं मानता हूं वीतरागता और अनेकान्त दोनों सत्य की खोज में समन्वित हैं। वीतरागता के बिना अनेकान्त का दृष्टिकोण नहीं बनता और अनेकांत के बिना समन्वय का दृष्टिकोण नहीं बनता और समन्वय के बिना दूसरे धर्मों और दर्शनों के साथ न्याय नहीं किया जा सकता।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि यह पुस्तक एक तुलनात्मक अध्ययन और एक समता का अध्ययन है। जिसकी परंपरा अणुव्रत के माध्यम से आचार्य तुलसी ने डाली थी, मैं मानता हूं कि यह पुस्तक वास्तव में एक अणुव्रत की दार्शनिक पुस्तक के रूप में सामने आई है। क्योंकि अणुव्रत किसी एक धर्म का नहीं है। वह सब धर्मों के लिए मान्य और सब धर्मों के लिए उपयोगी होता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि सबसे पुराना अहिंसा है जो हमेशा है और रहेगा, भारत में विभिन्न धर्मसंप्रदाय है उनमें सारे धर्मसंप्रदायों का सार कुछ देखा जाए तो अहिंसा ही दृष्टिगोचर होगा। अहिंसा वह तत्व है जो सबके लिए कल्याणकारी है। धर्मों का सार अहिंसा है, विशुद्ध मैत्री भाव है। सत्य और अहिंसा दोनो अभिन्न है। सत्य के अनंत आकाश में यात्रा करने के लिए दो पंख चाहिए। पहला पंख है शोध अनुसंधान का संकल्प, सत्य को पाने की तमन्ना। दूसरा संकल्प होना चाहिए – अनाग्रह। शोध की भावना और अनाग्रह दो पंख अगर आदमी के पास है वह व्यक्ति सत्य के अनंत आकाश में उड़ान भर सकता है।

शंकराचार्य स्वामी ओंकारानन्द सरस्वती ने कहा कि व्यक्ति के जीवन की सार्थकता यही है कि वह संतजनों की सेवा करे। उन्होंने कहा कि जैन धर्म में जितना त्याग है और संयम है उतना अन्य धर्मों में मिलना दुर्लभ है। जैन धर्म में अहिंसा, शांति और एकता अखण्डता अद्‌भूत है।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि सभी धर्मों के रास्ते अलग–अलग होते हुए भी एक ही है। अगर गहराई से देखा जाए तो सत्य एक ही है। जितने भी धर्म संसार में है उनका सार अध्यात्म ही है।

प्रोफेसर मुनि महेन्द्र कुमार ने ग्रंथ की मीमांसा करते हुए कहा कि यह एक ऐसा ग्रंथ तैयार हुआ है जिसके माध्यम से सभी व्यापक धर्मों का उल्लेख किया गया है। मुनि अभिजीतकुमार, साध्वी शशिप्रभा, समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा, नरेश जैन ने अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन प्रो. बच्छराज दूगड़ ने करते हुए सैयद गुलाब किबरिया के संदेश का वाचन किया। धन्यवाद ज्ञापन अशोक सुराणा ने किया।

राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर का समापन

लाडनूं, 30 मई।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा आयोजित दस दिवसीय राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर का समापन जैन विश्व भारती स्थित सुधर्मा सभा में आयोजित समारोह में हुआ। देश के कोने–कोने से शिविर में भाग ले रहे बालक–बालिकाओं ने युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में रोचक प्रस्तुतियां दी। शिविरार्थियों ने जैन विद्वान तैयार करने के आचार्य महाप्रज्ञ के आचार्य महाप्रज्ञ के स्वप्न को साकार करने के लिए अपने आपको नियोजित करने का संकल्प व्यक्त किया तो किसी ने ऐसे शिविरों का निरंतर आयोजित करते रहने की मांग रखी। भूपेन्द्र मुथा के संयोजकत्व में आयोजित इस शिविर की चारों ओर सरहना हुई।

समापन सत्र के प्रथम चरण को महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जसकरण चौपड़ा ने संबोधित किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष ने भूपेन्द्र मुथा और उनकी टीम को प्रतीक चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। शिविर संयोजक भूपेन्द्र मुथा ने अभिभावकों, शिविरार्थियों के साथ आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण एवं शिविर को सफल बनाने में अपना श्रम नियोजित करने वाले मुनि नीरजकुमार, मुनि जितेन्द्र कुमार, साध्वी शुभप्रभा, साध्वी शशीप्रभा का आभार जताया।

समारोह में मुनि जितेन्द्र कुमार, साध्वी शुभप्रभा, मोनिका बैद ने अपने विचारों की प्रस्तुति दी। बालकों की ओर से रोनक जैन, विकास जैन ने 'अज्ञ से प्रज्ञ बन जाए' गीत की प्रस्तुति दी। शिविर प्रशिक्षिका के नेतृत्व में बालिकाओं ने 'म्हाने बच्चों का शिविर प्यारा–प्यारा लागे।' गीत को प्रस्तुत किया। संचालन भूपेन्द्र मूथा ने किया।

निर्मल दुगड़ ने जीता सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी का खिताब

राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर में भाग ले रहे बालकों में निर्मल दुगड़ को सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी के खिताब से नवजा गया, वही बालिकाओं में सोलापुर की अनु छाजेड़ को प्रदान किया गया और अनुशाषित शिविरार्थी का पुरस्कार बालकों में अंकित बोथरा एवं बालिकाओं में सांगली निवासी श्वेता संचेती को दिया गया।

संगीत प्रतियोगिता में मुदित भंसाली ने बाजी मारी

राष्ट्रीय संस्कार निर्माण शिविर में आयोजित एकल संगीत प्रतियोगिता में जसोल निवासी मुदित भंसाली ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। जयंत सेठिया ने द्वितीय एवं रोनक बैद, गणेश बैद को संयुक्त तृतीय स्थान मिला। जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष जसकरण चौपड़ा, उपाध्यक्ष जसराज बुरड़, महामंत्री विनोद चौरड़िया, शिविर संयोजक भूपेन्द्र मुथा ने प्रतिक चिन्ह देकर शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया।